रास शुरू करने के लिए श्रीकृष्ण ने रास की अधिष्ठात्रि देवी श्रीराधा की प्रार्थना की। राधा के लिए भागवत में इस जगह पर योगमाया शब्द आया है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

शरद ऋतु की पूर्णिमा को वृंदावन के सेवाकुंज में रास का आयोजन हुआ। उपवन में छे ऋतुओं के फुल खिल गये। उन फुलों की खुशबू से सारा आसमंत महक उठा। बारा घंटे की रात में जीवों की क्या तृप्ती होगी? इसलिए जैसा पहले बताया गया रास एक ब्रम्हरात्री यानी चार अरब बत्तीस करोड वर्ष तक चला। इतने लंबे समय तक योगमाया ने जो रास में सम्मिलित होने के अधिकारी नही थे उन सबको गहरी नींद में सुला दिया। इतना ही नही योगमाया ने जो गोपियाँ रास में गयी थी उनकी जगह पर वैसेही शकल एवं शरीर का देह बनाकर लेटा दिया।

अब सवाल था कि गोपियों को कैसे बुलाया जाए? फिर से योगमाया की मदद से श्रीकृष्ण ने ऐसी दिव्य आवृत्ति की मुरली छेडी जिसे केवल उन गोपियों का अंत:करण पकड पाया जो उस ध्वनी को पकडने में सक्षम था। मतलब ये कि वो मुरली धुनी केवल उनको सुनाई पडी जो रास के अधिकारी जीव थे। ये मुरली ध्वनी कैलाश तक गयी जहा शंकरजी को उनकी समाधी में घुसकर रास संदेश दिया लेकिन पास के नंद, यशोदा, गोप आदि लोगों को नही सुनाई दी। वे अपना सोते रहे। आपको पता होगा कि शांत, दास्य, सख्य, वात्सल्य भाव के लोगों को रास नही मिला। माधुर्य भाव में भी मथुरा कि कुब्जा या द्वारिका की रानीयाँ आदि को रास नही मिला क्योंकि उनका प्रेम स्वसुख कामना मिश्रीत था। रास उनको मिला जिनका प्रेम स्वसुख कामना लेश शून्य था यानी जो श्रीकृष्ण से समर्था रति का निष्काम प्रेम करती थी।

रास दिव्य रसों का समूह है। दिव्य शब्द महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सुन्दर गायन, वादन, संगीत, लयबद्ध नृत्य, वन विहार, जल

विहार जो रास में हुआ उसे शाश्वत और अनंत आनंद के चरित्र प्रदान करता है। यह इस दुनिया में किए गए नृत्य के समान दिखता है लेकिन भौतिक सुखों से अंत में पीड़ा होती है जबकि दिव्य सुख आपको अधिक दिव्य सुख देता है। दिव्य आनंद ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132